यीशु और उसके प्ररितों का शुभ समाचार घोषित करना।

जो बच्चों को शिक्षा देते हैं वे पढ़ें अध्ययन एम 2 ब

मसीही प्रभु यीशु की मृत्यु और जी उठने के शुभ संदेश की और उसकी क्षमा करने और मन फिराव विश्वासियों को अनन्त जीवन देने की प्रतिज्ञा की घोषणा करते हैं। (लूका 24:46-48)

1. अपने ह्दय को शुभ समाचार की घोषणा करने के लिये तैयार करना।

अच्छी प्रेरिताई लोगों को अपने पापों की क्षमा और प्रभु यीशु में विश्वास करने के लिये आगे बढ़ाती है। जब हम लोगों को सत्य शुभ संदेश बताते हैं, तब पवित्र आत्मा उन्हें मन फिराव और विश्वास करने के लिये प्रेरित करती है।

प्रभु यीशु के शुभ समाचार को और सही प्रकार से समझने के लिये जो क्षमा और अनन्त जीवन दिलाता है, उसके लिये नीचे दिये गये बाइबल के अध्यायों को ध्यानपूर्वक पढ़िये।

लूका 18:31-34 में ढूंढिये कि प्रभु ने अपनी मृत्यु से पहिले और जी उठने के बारे में क्या भविष्यवाणी की....

- उसकी मृत्यु कहाँ होगी?
- अन्यजातियाँ उसके साथ क्या करेंगी?
- प्रभु यीशु अपने आप तीन दिन के बाद क्या करेगा?

लूका 24:5-9 में ढूंढिये कि दो संदेशवाहकों ने कुछ महिलाओं को प्रभु यीशु के बारे में क्या बताया.

- पापियों ने उसके साथ क्या किया?
- उसकी मृत्यु कैसे हुई?
- उसने तीन दिन के बाद क्या किया?

लूका 24:36-48 में ढूंढिये कि प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने के बाद आपने आप पर क्या घोषणा की.....

- प्रभु यीशु ने ये कैसे प्रभावित किया कि वह सचमुच मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुका है (आयत 36-43)।
- कौन से पवित्र शास्त्रों और पवित्र लोगों ने उसकी मृत्यु और जी उठने के बारे में भविष्यवाणी की (44-45)
- उसे अपने आप तीन दिन दु:ख उठाने के बाद क्या करना पड़ा? (46)
- हम विश्वासियों को दूसरे लोगों से हर जगह क्या घोषणा करनी चाहिए? (47)
- प्रभु यीशु के चेलों ने इन सब बातों के बारे में क्या किया? (48)

प्रेरितों के काम 2:21-24 और 37-38 में ढूंढिये, उस संदेश में जो पतरस ने यहूदी लोगों को दिया.....

- पतरस ने प्रभु यीशु की मृत्यु और जी उठने के बारे में क्या कहा? (2:21-24)
- यहूदियों को क्षमा और पवित्र आत्मा पाने के लिये क्या करना पड़ा? (2:37-38)

प्रेरितों के काम 26:19-23 में ढूंढिये कि पौलुस ने अन्यजातियों के लोगों से संदेश में क्या घोषणा की.....

- अन्यजातियों को क्या करना पड़ा (20)(ध्यान दीजिये कि परमेश्वर चाहता है कि यहूदी और अन्यजातियाँ बचने के लिये मन फिराएँ।)
- यीशु की मृत्यु और जी उठने के बारे में (23)।

रोमियों 6:8-14 में ढूंढिये कि हमें आत्मिक रूप से क्या होता है जब हम बपतिस्मा लेते हैं.....

- जब यीशु मरा तो उसके साथ और किसकी मृत्यु हुई? (8-9)
- जब यीशु जिन्दा हुआ, तो उसके साथ और कौन जीवित हुआ?

2. सहकर्मियों के साथ सप्ताह में की जाने वाली चीजों के बारे में योजना बनाना।

अविश्वासियों के पास जाइये जिन्होंने प्रभु यीशु की ताकत के द्वारा चंगाई प्राप्त की है, उन्हें शुभ समाचार के बारे में समझाइये और उन प्रतिज्ञाओं के बारे में बताइये जो रोमियों 5:10 और 10:9-10 में पाई जाती हैं।

अपने सहकर्मियों के साथ वार्तालाप कीजिये कि कैसे आप और वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करते आये हैं और यह योजना बनाये कि प्रभु यीशु मरा और वह फिर जीवित हुआ, और लोगों को अपना पुराना जीवन छोड़कर नये जीवन के लिये मसीह में विश्वास रखना चाहिये।

चित्रों का प्रयोग कीजिये। अगर आपकी संस्कृति धार्मिक विषयों के चित्रों की अनुमति देती है तो साधारण चित्र बनाइये जो आप और विश्वासी दूसरे लोगों को दिखा सकते हैं जब वह प्रभु यीशु का शुभ समाचार सुनाते हैं। ऊपर दिये गये साधारण चित्र उदाहरण हैं।

बपतिस्मा लिये हुये विश्वासियों के पास जाइये जो हतोत्साहित होते हैं और जिनके मन में संदेह है और उनको मसीह की शक्ति के बारे मे बताइये जो उनको घर्मिक जीवन जीने के लिये प्रेरित करें। आप रोमियो 6:1-14 का उपयोग कर सकते हैं।

3. अपने सहकर्मियों के साथ आने वाली स्तुति के समय की योजना बनायें।

उन गतिविधियों को चुनिये जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरी करें

बतायें या अभिनय करके दिखायें यीशु का मृत्यु में से जी उठने के बाद अपने चेलों पर प्रगटीकरण और समझाइये जो आपने लूका 24 (भाग 1) में पाया। जो आपने पाया उसके बारे में उनसे प्रश्न पूछिये।

क्या बच्चों ने बड़ों के सामने नाटक कविता और प्रश्न प्रस्तुत किये जो उन्होंने तैयार किये थे।

विश्वासियों को तैयार कीजिये एक साधारण और शक्तिशाली संदेश अविश्वासियों के पास ले जाने के लिये जैसा कि वह जो चित्रों के नीचे है (ऊपर)।

"आवश्यकता है दो चीजें जानने और करने की"

अब

1) आपके लज्जापूर्ण कार्यों को जाने के कारण प्रभु आपको नरक भेजेगा
2) आपके लज्जापूर्ण कार्यों के कारण यीशु को आना और क्रूस की मृत्यु सहना पड़ा और वह पून:र्जीवित हुआ हमें क्षमा करने और अनन्त जीवन देने के लिये।

करो

1) आपको अपने लज्जापूर्ण कार्यों पर पछताना चाहिये और उनसे फिरना चाहिये।
2) आपको प्रभु येशु पर विश्वास करना चाहिये जो मरा और पून:र्जीवित हुआ आपको क्षमा देने के लिये।

प्रभु भोज को बताने के लिये पढ़िये और बताइये प्रभु येशु का क्रूस पर मारा जाना जो कि पाया जाता है लूका 23:13-48

क्या विश्वासियों ने छोटे समूह बनाये हैं:

- अपने मित्रों और सम्बंधियों के लिये प्रार्थना करे कि वह बच जायें।
- शुभ समाचार समझाने के तरीकों के लिये प्रार्थना करना।
- योजना बनायें कि उनके पास कब जायें।
- एक साथ मिलकर याद कीजिये दो चीजें जो लोगों को जाननी हैं और दो चीजें जो उन्हें करनी हैं। (ऊपर)

एक साथ मिलकर **याद करें लूका 24:46-48**

यीशु इस जगत में मनुष्य बन कर आए, उसी समय और स्थान में जन्मे जिसकी प्रतिज्ञा बहुत पहले से धार्मिक व्यक्तियों ने की।

अच्छाईयाँ करने, रोमियों को चंगाई देने और दुष्टआत्मायें निकाले और मृत व्यक्तियों को पुन:र्जीवित करने के द्वारा यीशू ने ये दर्शाया कि वो ही चुना हुआ है। उसने ये भी सिखाया कि प्रभु को कैसे जानें।

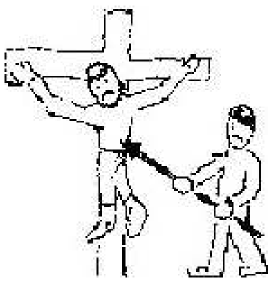

शैतानी धार्मिक गुरूओं ने यीशु को नीचा दिखाया और शैतानी अविश्वासियों ने उसे लकड़ी की क्रूस पर कीलो से ठोक कर मारा जहाँ उसकी मृत्यु हुई।

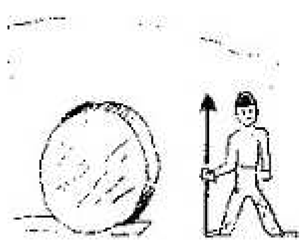

अधिकारियों ने यीशु के मित्रों को उसकी लाश कब्र में रखने की अनुमति दी। रोमी अधिपति ने लोगों को उस स्थान से दूर रखने के लिये सिपाहियों को नियुक्त किया।

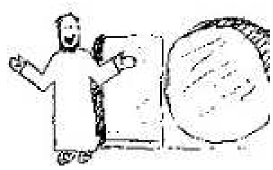

तीन दिनों के पश्चात् यीशु मुर्दों में से जीवित हुए और बहुत से व्यक्तियों को दर्शन दिये। उसने हर स्थान के व्यक्तियों को अपने मार्ग को बदलने और उसके ऊपर विश्वास करने के लिये कि वह सब के पाप क्षमा करेगा और उन्हें अनन्त जीवन देगा बताया।